AIIMS की तकनीक से घटा ब्रेन हैमरेज का रिस्क

ब्रेन में नसों का गुच्छा बनने के मरीजों को फायदा

Rahul.Anand@timesgroup.com

कामयाबी !

- ड्रेनिंग वेन शील्डिंग से गामा नाइफ की परेशानियां घटी
- एम्स की रिसर्च के बाद साइड इफेक्ट का खतरा घटा
- न्यूरोसर्जरी डिपार्टमेंट में कई साल तक की गई स्टडी
- पहले गामा नाइफ के बाद देखी जाती थी कई परेशानियां

■ **एम्स :** ब्रेन में नसों का गुच्छा बनने की परेशानी वाले मरीजों के लिए अच्छी खबर है। रेडिएशन ट्रीटमेंट गामा नाइफ के बाद होने वाली परेशानियों को कम करने का तरीका एम्स ने खोज लिया है। एम्स के न्यूरोसर्जरी डिपार्टमेंट में ऐसे 185 लोगों पर एक स्टडी की गई है, जिन्हें गामा नाइफ के दौरान ड्रेनिंग वेन शील्डिंग प्रोसीजर से गुजरना पड़ा था। इस प्रोसीजर के बाद मरीजों में साइड इफेक्ट की संभावना 1 पर्सेंट से भी कम रह गई। अब तक पूरी दुनिया में गामा नाइफ के बाद एडिमा और ब्रेन हैमरेज का खतरा देखा गया है। अब भारत के डॉक्टर ने इस खतरे को 10 पर्सेंट से घटाकर एक पर्सेंट से भी कम कर दिया है। हाल ही में वर्ल्ड के बेस्ट मेडिकल जनरल पबमेड में यह स्टडी पब्लिश की गई है।

एम्स के न्यूरो सर्जन डॉ दीपक अग्रवाल ने बताया कि इंट्राकार्नियल आर्टेरियोवेनस मेलफॉर्मेशंस (AVM) में गामा नाइफ प्रोसीजर का यूज किया जाता है। डॉक्टर ने कहा कि एवीएम में मरीज के ब्रेन में नसों का गुच्छा बन जाता है। इस गुच्छे को खत्म करने के लिए गामा नाइफ के जरिए बिजली का शॉक दिया जाता है। इस रेडिएशन से 10 पर्सेंट खतरा साइड इफेक्ट का भी रहता है। कई बार इस साइड इफेक्ट से मरीज के ब्रेन में एडिमा बन जाता है या फिर ब्रेन हैमरेज हो जाता है।

डॉ दीपक ने कहा कि इस स्टडी में 185 लोगों को शामिल किया। जनवरी 2009 से फरवरी 2014 तक इसमें उन मरीजों को शामिल किया गया, जिनकी एवीएम बीमारी में गामा नाइफ थेरेपी चल रही थी। डॉ दीपक ने कहा कि लोगों को दो ग्रुप में बांटा गया। इसमें 96 लोगों को कंट्रोल ग्रुप में रखा गया और 89 लोगों को टेस्ट ग्रुप में रखा गया। जिन लोगों में ड्रेनिंग वेन शिल्डिंग में शामिल नहीं किया गया, उनका हर छह महीने में फॉलोअप किया गया और उन्हें हो रही परेशानियों को जांचा गया। इनमें 10 पर्सेंट तक परेशानियां कम पाई गईं। डॉक्टर ने कहा कि दोनों ग्रुप का हर जरूरी टेस्ट, डेमोग्राफिक्स, कोमॉरबिटीज, ट्रीटमेंट, रेडिएशन डोज सही से किया गया था। जब गामा नाइफ से रेडिएशन दी जाती है तो नसों का पूरा गुच्छा नष्ट कर दिया जाता है। इससे एडिमा बनने और ब्रेन हैमरेज का खतरा रहता था। इस प्रोसीजर में 5 पर्सेंट नसों के गुच्छे को छोड़ दिया जाता है, बाकी गुच्छा बाद में सूख जाता है। इससे ब्रेन हैमरेज का खतरा लगभग खत्म हो गया है। यह तकनीक एम्स ने बनाई है और काफी संख्या में मरीजों को फायदा हुआ।